एथनोमेथडोलॉजी की कुछ सामान्य अन्तःक्रियात्मक पद्धतियां (Some General Interactive Methods of Ethnomethodology)

वास्तविकता क्या है, यथार्थ क्या है, आज तक किसी को पता नहीं लगा। फिर भी समाज वैज्ञानिकों और दार्शनिकों का सदियों से यह प्रयास रहा है कि हम किसी न किसी तरह आखिरी या आधारभूत यथार्थ का पता लगायें। एथनोमेथडोलॉजी भी यथार्थ की इस खोज के संदर्श को लेकर अनुसंधान में व्यस्त है। एथनोमेथडोलॉजी *उन विधियों पर अपने आपको केन्द्रित करती है जिनका प्रयोग लोग वास्तविकता की संरचना के लिये करते हैं।* मनुष्य की अन्तःक्रियाएं कई तरह की होती है। वह पढ़ता-लिखता है, खाता-पीता है, नौकरी-धंधा करता है, इस प्रकार अन्तःक्रियाएं असंख्य व असीम हैं। लेकिन एथनोमेथडोलॉजी इन सामान्य अन्तःक्रियाओं को छोड़कर उन अन्तःक्रियाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है जो वास्तविक या यथार्थ के निर्माण को बनाये रखने और परिवर्तन के लिये प्रयुक्त होती है। ऐसी अन्तःक्रियाएं जो यथार्थ को बनाये रखने वाली विधियों पर केन्द्रित हैं, उनके दो प्रकार यहां हम देते हैं :

1. ***सामान्य स्वरूप की खोज (Search for the Normal Form)***

   कई बार अन्तःक्रिया करने वाले व्यक्तियों में वास्तविकता यथार्थ के प्रति संदिग्धता पैदा हो जाती है: क्या सही है, गलत है? ऐसी दुविधा में प्रयत्न यह किया जाता है कि वे यथार्थ को उसके सही संदर्भ में देखें। उदाहरण के लिये गांव के कुछ लोग अस्थि विसर्जन गांव के तालाब में करते है और कुछ गांव की नदी में। अस्थि विसर्जन के लिये उपयुक्त तालाब है या नहीं। ऐसी संदिग्ध अवस्था का खुलासा सामान्य स्वरूप की खोज से मिलता है। धार्मिक ग्रन्थों, और आख्यानों से पता चलता है कि अस्थि विसर्जन गंगा में होना चाहिये और गांव की नदी गंगा का ही स्वरूप है, तालाब नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि एथनोमेथडोलॉजी बराबर यह प्रयास करती है कि यथार्थ को उसके सामान्य स्वरूप में देखा जाये।

2. ***संदर्शों की पारस्परिकता (Reciprocity of Perspective)***

   एथनोमेथडोलॉजी का आग्रह है कि जब कर्ता किन्हीं धारणाओं (Presumptions) को लेकर आपस में अन्तःक्रिया करते हैं तो यह माना जाता है कि इन कर्ताओं के संदर्श पारस्परिक रूप से समान रहे होंगे। जब राजनैतिक दल चुनाव में व्यस्त होते हैं तब एक ही दल के पक्ष में मतदान करने वाले कर्ता दल के क्रिया कलापों के प्रति सामान्य धारणा रखने वाले होते हैं।

ऊपर हमने सामान्य अन्तःक्रिया की जिन दो पद्धतियों का प्रयोग किया है वे केवल दृष्टान्त मात्र है। आम लोग निश्चित रूप से अन्तःक्रियाएं करने के लिये कई विधियों को काम में लेते हैं, मुख्य बात तो यह है कि किन परिस्थितियों में लोग अन्तःक्रिया की इन विधियों को अपनाते हैं, और उनका महत्व क्या हैं? एथनोमेथडोलॉजी का साहित्य

अन्तःक्रिया की इन विभिन्न विधियों पर विस्तारपूर्वक सामग्री देता है।

एथनोमेथडोलॉजी से सम्बद्ध सामान्य प्रस्ताव

(General Ethnomethodological Proposition)

एथनोमेथडोलॉजिकल सिद्धान्त कई मान्यताओं को लेकर चलता हैं। इन मान्यताओं को मुख्य रूप से दो अभिधारणाओं में रखा जा सकता है :

1. सामाजिक व्यवस्था को कुछ ऐसी पद्धतियों के प्रयोग द्वारा बनाये रखा जाता है जिसमें लोग व्यवस्था की वास्तविकता को समान रूप से स्वीकार करते है। 2. जिसे लोग सामान्य रूप से यथार्थता समझते हैं वे वास्तव में है या नहीं, यह कम महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण यह है कि इस यथार्थता को बनाये रखने में जिन पद्धतियों को प्रयोग में लाया जाता है उनमें भागेदारी कितनी हैं?

टर्नर ने एथनोमेथडोलॉजी की उपरोक्त मान्यताओं के आधार पर दो प्रस्तावों या प्राक्कल्पनाएं रखी है :

1. जितने अधिक लोग अन्तःक्रिया की पद्धतियों के प्रयोग से, जो यथार्थ को जानने के लिये होती है, असहमत होते हैं उतनी ही कम सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने की सम्भावना होती है।
2. लोग जितना अधिक सामाजिक यथार्थता के अस्तित्व के बारे में संदिग्ध होते हैं उतनी ही सामाजिक व्यवस्था कमजोर होती हैं।

ऊपर के प्रस्ताव व अभिधारणाएं केवल दृष्टान्त हैं। एथनोमेथडोलॉजी में जिस बात की आवश्यकता है वह यह कि उन विशिष्ट दशाओं की पहचान की जाये जिनमें लोक जीवन यथार्थता के निर्माण और अस्तित्व को बनाये रखने के लिये विधियों को काम में लोते हैं। यह पहचान वस्तुतः *लोक विधियों* (Folk Methods) की पहचान है।